

न्यायालय राजस्व अपील प्राधिकारी, अजमेर

(पीठासीन अधिकारी:—श्री बी०एल०मेहरड़ा, आर०ए०एस०)

अपील संख्या:—34 / 2016 / 223 (2016 / 00034)

1. श्रीमती कान्ता शर्मा पत्नि धनराज शर्मा, जाति राकावत ब्राहमण, निवासी मकान नंबर 210—बी, आदर्श नगर, गली नंबर 1 अजमेर रोड़, ब्यावर, तहसील ब्यावर, जिला अजमेर ।

अपीलांट

बनाम

1. नारायणसिंह पुत्र गोमा,
2. श्रीमती मीरा पुत्री गोमा,
दोनों जाति रावत, निवासी ग्राम ठीकराना मेन्द्रातान, तह० ब्यावर, जिला अजमेर ।

वादीगण/रेस्पोंडेंट्स

3. प्रकाश पुत्र करमा,
4. सुमेर पुत्र करमा,
5. श्रीमती गंगा पत्नि स्व० करमा,
6. पप्पूसिंह पुत्र स्व० करमा नाबा०जरिये कुदरती माता श्रीमती गंगा पत्नि स्व० करमा,
7. जफरू पुत्र जीता,
8. बीरमा पुत्र बाला,
9. छीतर पुत्र घीसा,
10. शंकर पुत्र घीसा,
11. किशनी पुत्री घीसा,
समस्त जाति रावत, निवासी ग्राम सिंघाडिया, तह० ब्यावर, जिला अजमे ।
12. गेन्दी पुत्री अमरा, जाति रावत, नि० ग्राम अतीतमण्ड, गोल का खेड़ा, तह० ब्यावर, जिला अजमेर ।
13. किशना पुत्र शेरा (फौत)
14. पदमा पुत्र रूपा (फौत)
15. नन्दा पुत्र झूझां (मृतक) जरिये वारिसान:—
15/1— श्रीमती कमला पुत्र नन्दा,
15/2— श्रीमती बिदामी पुत्री नन्दा,
15/3— श्रीमती सीता पुत्री नन्दा,
15/4— श्रीमती लाली पुत्री नन्दा,
समस्त जाति रावत, नि० ग्राम ठीकराना मेन्द्रातान, तह० ब्यावर हाल नि० सिंघाडिया, तह० ब्यावर, जिला अजमेर ।
16. महादेवसिंह पुत्र नाथूसिंह,
17. श्रीमती प्रेम पत्नि महादेव,
दोनों जाति रावत, नि० मूलचंद नगर, गोविन्दपुरा, ब्यावर, तह० ब्यावर, जिला अजमेर ।
18. मंगलसिंह पुत्र गोपालसिंह,
19. रामेश्वरसिंह पुत्र गोपालसिंह,
20. भंवरसिंह पुत्र गोपालसिंह,
21. रूपसिंह पुत्र गोपालसिंह,
22. हुकमसिंह पुत्र गोपालसिंह,
समस्त जाति रावत, नि० ग्राम बिच्छुचोड़ा, तह० ब्यावर, जिला अजमेर ।
23. गोविन्द प्रसाद पुत्र गंगाप्रसाद कायस, नि० ठीकराना मेन्द्रातान, तहसील ब्यावर जिला अजमेर (फौत)

14. राजस्थान सरकार जरिये तहसीलदार, ब्यावर, जिला अजमेर ।
प्रतिवादीगण/रेस्पोंडेंटस

अपील अंतर्गत धारा 223 राजस्थान काश्तकारी अधिनियम 1955 विरुद्ध विरुद्ध निर्णय व प्राथमिक डिक्री विद्वान उपखण्ड अधिकारी, ब्यावर, दिनांक 8.12.2011 अंतर्गत वाद संख्या 126/2008.

उपस्थित:-

1. श्री शोकिन्दलाल गुर्जर, वकील अपीलांट ।
2. श्री पंकज गादिया, वकील रेस्पोंडेंट संख्या 1 व 2.
3. रेस्पोंडेंट संख्या 3 से 11, 16, 17 अनुपस्थित ।

निर्णय

दिनांक:-5.4.2019

1. यह अपील विद्वान उपखण्ड अधिकारी, ब्यावर के निर्णय व डिक्री दिनांक 8.12.2011के विरुद्ध इस न्यायालय मे प्रस्तुत हुई है ।
2. संक्षेप में प्रकरण के तथ्य इस प्रकार है कि वादीगण/रेस्पोंडेंट संख्या 1 व 2 ने प्रतिवादीगण/रेस्पोंडेंट संख्या 3 लगायत 24 के विरुद्ध एक राजस्व वाद अंतर्गत धारा 53 एवं 63 राज0काश्त0अधि0 के तहत पेश कर निवेदन किया कि वादग्रस्त खाता संख्या 30 आराजी खसरा संख्या 205 रकबा 2-6-00, खसरा नंबर 138 रकबा 1-16-00, खाता संख्या 39 के खसरा संख्या 25 रकबा 4 बिस्वा, खसरा नंबर 135 रकबा 2 बिस्वा, खसरा संख्या 136 रकबा 3-01-10, खसरा संख्या 137 रकबा 3-3-00, खसरा संख्या 139 रकबा 1-14-00, खसरा संख्या 729 रकबा 15 बिस्वा, खसरा संख्या 731 रकबा 2 बिस्वा, खाता संख्या 315 खसरा नंबर 140 रकबा 2-14-00, खसरा संख्या 728 रकबा 1-4-00, खसरा संख्या 134 रकबा 01-02-00, खसरा संख्या 204 रकबा 2-4-10 बीघा कुल कित्ता 13 कुल रकबा 20 बीघा 8 बिस्वा 10 बिस्वांसी वाके ग्राम ठीकराना महेन्द्रातान तह0 ब्यावर में स्थित है । उक्त वादग्रस्त आराजियात के वादीगण रिकार्डेड सहखातेदार है । वादीगण एवसं प्रतिवादीगण के मध्य वादग्रस्त आराजियात के बंटवारा एवं प्रतिवादी संख्या 7 लगायत 9 के हिस्से की आराजी पर कब्जा 70 वर्षों से अधिक होने से खातेदारी का अवसान होने से उनके इंद्राज हफज किया जावे । वादीगण के 1/8 हिस्से का बंटवारा कर, राजस्व अभिलेख में इंद्राज किया जावे । विद्वान अधी0न्याया0 ने अपने निर्णय व डिक्री दिनांक 8.12.2011 द्वारा वादीगण/रेस्पोंडेंट संख्या 1 व 2 का वाद में प्राथमिक डिक्री पारित की । अधी0न्याया0 के इस निर्णय व डिक्री से असंतुष्ट होकर अपीलांट ने यह अपील इस न्यायालय में पेश की है ।
3. अपील दर्ज रजिस्टर की जाकर रेस्पोंडेंट को तलब किया गया । रेस्पोंडेंट संख्या 1 व 2 उपस्थित, शेष रेस्पोंडेंट 3 से 11, 16, 17 बावजूद सूचना के अनुपस्थित रहे । प्रकरण में उभयपक्ष अभिभाषकगण की बहस सुनी गई ।
4. अपीलांट ने अपील के साथ प्रार्थना पत्र धारा 96 जा0दी0 पेश कर निवेदन किया कि वादीगण ने अधी0न्याया0 के समक्ष प्रस्तुत वाद में प्रार्थिया को पक्षकार नहीं बनाया है जबकि वादग्रस्त आराजी खसरा नंबर 140 रकबा 2-14-00, खसरा संख्या 134 रकबा 1-2-00, खसरा नंबर 204 रकबा 2-4-10 में से वादी संख्या 1 नारायणसिंह, वादी संख्या 2

श्रीमती मीरा एवं वाद में प्रतिवादी/रेस्पो0 संख्या 15 नन्दा पुत्र झूझा ने अपना 1/4 हिस्सा एवं खसरा संख्या 728 रकबा 1-4-00 वादी संख्या 1 नारायणसिंह, वादी संख्या 2 श्रीमती मीरा ने 1/4 हिस्सा में से 2/3 हिस्सा का बेचान जरिये पंजीकृत विक्रय पत्र दिनांक 14.7.2008 को किया था । उक्त विक्रयपत्रों के आधार पर प्रार्थिया क्यशुदा आराजियात की खातेदार काश्तकार है । वादीगण ने प्रार्थिया की पीठ पीछे प्रार्थिया के हितां के विरुद्ध आदेश पारित करवाया है । अपीलाधीन निर्णय व डिक्री द्वारा विवादित आराजियात के राजस्व रिकार्ड में से प्रार्थिया का नाम हजफ करने के आदेश से प्रार्थिया के हक व अधिकार प्रभावित हुए है । प्रार्थिया अपीलाधीन आदेश से पीड़ित एवं व्यथित पक्षकार है । अतः प्रार्थना पत्र स्वीकार कर अपीलाधीन निर्णय व डिक्री दिनांक 8.12.2011 के विरुद्ध अपील प्रस्तुत करने की अनुमति प्रदान की जावे ।

5. विद्वान वकील अपीलांट ने अपील के साथ प्रार्थना पत्र धारा 5 मियाद अधि0 पेश कर निवेदन किया कि अपीलांट वाद में आवश्यक पक्षकार होने के बावजूद वादीगण ने अपीलांट को पक्षकार नियुक्त नहीं कर एकतरफा में अपीलाधीन निर्णय व डिक्री पारित करवाई है । अपीलांट अधी0न्याया0 में पक्षकार नहीं होने से निर्णय व डिक्री की जानकारी नहीं हो सकी थी । निर्णय व डिक्री की सर्वप्रथम जानकारी दिनांक 11.12.2015 को पटवारी हल्का के पास राजस्व अभिलेख की प्रति लेने गई तब हुई तत्पश्चात् अधी0न्याया0 के निर्णय व डिक्री की जानकारी कर, प्रमाणित प्रतियां प्राप्त कर जानकारी से अंदर मियाद यह अपील पेश की है । अपील में हुआ विलंब सद्भाविक एवं उचित है । अतः विलंब माफ किया जाकर अपील अंदर मियाद शुमार की जावे ।
6. प्रकरण में गुणावगुण पर बहस करते हुए विद्वान वकील अपीलांट ने बहस में अपीलमीमों में उल्लेखित तथ्यों की ताईद करते हुए कथन किया कि अधी0न्याया0 ने निर्णय व डिक्री पारित करने से पूर्व अपीलांट जो कि विवादित आराजियात का क्रेता होकर आवश्यक पक्षकार था, को वाद में पक्षकार कायम किये बिना एकतरफा में अपीलाधीन निर्णय व डिक्री पारित की है जो नैसर्गिक न्याय के सिद्धांत के विपरीत होने से निरस्तनीय है । बहस में आगे कथन किया कि वादपत्र के पैरा संख्या 1 में अंकित आराजी खाता संख्या 315 के खसरा संख्या 140 रकबा 2-14-00, खसरा संख्या 134 रकबा 1-2-00, खसरा संख्या 204 रकबा 2-4-10 में से वादी संख्या 1 नारायणसिंह, वादी संख्या 2 श्रीमती मीरा एवं वादी में प्रतिवादी/रेस्पो0 संख्या 15 नन्दा पुत्र झूझा ने अपना 1/4 हिस्सा एवं खसरा संख्या 728 रकबा 1-4-00 में वादी संख्या 1 नारायणसिंह, वादी संख्या 2 श्रीमती मीरा ने 1/4 हिस्सा में से अपना 2/3 हिस्सा का बेचान जरिये पंजीकृत विक्रय पत्र दिनांक 14.7.2008 को अपीलांट को किया था किन्तु वादीगण/रेस्पो0 संख्या 1 व 2 ने अधी0न्याया0 के समक्ष प्रस्तुत वाद में उक्त तथ्य को छिपाते हुए अधी0न्याया0 को गुमराह कर दिनांक 14.7.2018 को अपीलांट के पीठ पीछे एकतरफा में निर्णय व डिक्री पारित करवाई है जिसे विधिसम्मत नहीं माना जा सकता है । विद्वान वकील अपीलांट ने बहस को आगे बढ़ाते हुए कथन किया कि वादीगण/रेस्पो0 एवं प्रतिवादीगण द्वारा वाद में लिप्त आराजियात में से कुछ आराजी का वाद प्रस्तुत करने से पूर्व बैचान किया जा चुका है इस बाबत् तयि अधी0न्याया0 के समक्ष पत्रावली पर आने के उपरांत भी अधी0न्याया0 द्वारा मौजूदा खातेदारान को वाद में पक्षकार बनाने बाबत् कोई कार्यवाही नहीं की । वादीगण द्वारा खातेदारी आराजी का बेचान किये जाने के बाद उनके खातेदारी अधिकार समाप्त हो गये थे तथा उन्हें विक्रयशुदा आराजी बाबत् वाद प्रस्तुत करने का कोई अधिकार नहीं था । यह भी कथन किया कि अधी0न्याया0 की डिक्री की पालना इजराय में स्वयं पटवारी हल्का एवं तहसीलदार द्वारा प्रेषित मौका रिपोर्ट दिनांक 11.

9.2012 एवं इजराय की कार्यवाही के दौरान बैचानशुदा आराजी का स्पष्ट उल्लेख किया गया है कि वादीगण एवं प्रतिवादीगण द्वारा निर्णय एवं डिक्री में लिप्त आराजी का बैचान पूर्व में किया जा चुका है तथा क्रेता के पक्ष में नामांतरण दर्ज है इसके बावजूद अधीन्याया0 ने उपरोक्त मौका रिपोर्ट को नजरअंदाज कर अपीलाधी निर्णय व डिक्री पारित की है जिसे विधिसम्मत नहीं कहा जा सकता है । अतः अपील अपीलांट स्वीकार कर अधीन्याया0 का निर्णय व डिक्री अपीलांट की क्यशुदा आराजी की हद तक निरस्त की जावे । विद्वान वकील अपीलांट ने अपने कथनों के समर्थन में 2001 आर0आर0टी0 (1) पेज 15 को उद्धरित किया । ।

7. जवाब बहस में विद्वान वकील रेस्पो0 संख्या 1 व 2 ने कथन किया कि अधीन्याया0 का निर्णय व डिक्री विधिसम्मत है । अधीन्याया0 ने पत्रावली पर उपलब्ध संपूर्ण दस्तावेजी साक्ष्यों का विस्तृत विवेचन एवं विश्लेषण कर निर्णय व डिक्री पारित की है जिसमें किसी हस्तक्षेप की आवश्यकता नहीं है । अतः अपील अपीलांट निरस्त की जावे ।
8. हमने उभयपक्ष बहस पर मनन किया एवं पत्रावली पर उपलब्ध दस्तावेजी साक्ष्यों का अवलोकन किया । हम सर्वप्रथम अपीलांट द्वारा प्रस्तुत प्रार्थना पत्र धारा 96 जा0दी0 एवं धारा 5 मियाद अधि0 का निस्तारण करना उचित समझते हैं ।
9. अपीलांट ने अपने प्रार्थना पत्र धारा 96 में कथन किया कि वादपत्र के पैरा संख्या 1 में अंकित आराजी खाता संख्या 315 के खसरा संख्या 140 रकबा 2-14-00, खसरा संख्या 134 रकबा 1-2-00, खसरा संख्या 204 रकबा 2-4-10 में से वादी संख्या 1 नारायणसिंह, वादी संख्या 2 श्रीमती मीरा एवं वादी में प्रतिवादी/रेस्पो0 संख्या 15 नन्दा पुत्र झूझा ने अपना 1/4 हिस्सा एवं खसरा संख्या 728 रकबा 1-4-00 में वादी संख्या 1 नारायणसिंह, वादी संख्या 2 श्रीमती मीरा ने 1/4 हिस्सा में से अपना 2/3 हिस्सा का बेचान जरिये पंजीकृत विक्रय पत्र दिनांक 14.7.2008 को अपीलांट को किया था किन्तु वादीगण/रेस्पो0 संख्या 1 व 2 ने अधीन्याया0 के समक्ष प्रस्तुत वाद में उक्त तथ्य को छिपाते हुए अधीन्याया0 को गुमराह कर दिनांक 14.7.2018 को अपीलांट के पीठ पीछे एकतरफा में निर्णय व डिक्री पारित करवाई है । इस संबंध में पत्रावली पर उपलब्ध विक्रय पत्र दिनांक 14.7.2008 के अवलोकन से यह स्पष्ट है कि विवादित भूमि गाता संख्या 315 के खसरा संख्या 140 रकबा 2-14-00, खसरा संख्या 134 रकबा 1-2-00, खसरा संख्या 204 रकबा 2-4-10 में से वादी संख्या 1 नारायणसिंह, वादी संख्या 2 श्रीमती मीरा एवं वादी में प्रतिवादी/रेस्पो0 संख्या 15 नन्दा पुत्र झूझा ने अपना 1/4 हिस्सा एवं खसरा संख्या 728 रकबा 1-4-00 में वादी संख्या 1 नारायणसिंह, वादी संख्या 2 श्रीमती मीरा ने 1/4 हिस्सा में से अपना 2/3 हिस्सा का बेचान जरिये पंजीकृत विक्रय पत्र दिनांक 14.7.2008 के द्वारा अपीलांट के पक्ष में किया गया है । उक्त विक्रय पत्र की पालना में राजस्व रिकार्ड में क्रेता अपीलांट का नाम दर्ज भी किया जा चुका है जिसकी पुष्टि जमाबंदी से होती है । वादीगण द्वारा विवादित भूमि का विक्रय किये जाने के बावजूद इन्हीं भूमियों के संबंध में वाद प्रस्तुत किया गया तथा उक्त वाद में अपीलांट/क्रेता जो कि आवश्यक पक्षकार थी उसे पक्षकार बनाये बिना तथा अधीन्याया0 को गुमराह कर एकतरफा में अपीलाधीन निर्णय व डिक्री पारित करवाई है । चूंकि अपीलांट विवादित भूमि की सद्भाविक क्रेता होकर राजस्व रिकार्ड में खातेदार काश्तकार दर्ज है किन्तु अधीन्याया0 के समक्ष प्रस्तुत वाद में अपीलांट को पक्षकार कायम किये बिना एकतरफा में निर्णय व डिक्री पारित की गई है । अधीन्याया0 के उक्त अपीलाधीन निर्णय व डिक्री से अपीलांटस के हक व अधिकार प्रभावित होना पूर्णतया प्रकट होते हैं । हम न्यायहित में अपीलांट को सुना जाना उचित समझते हैं । अतः अपीलांट द्वारा प्रस्तुत

प्रार्थना पत्र धारा 96 जा0दी0 स्वीकार कर अपीलांट को अपीलाधीन निर्णय व डिक्री दिनांक 8.12.2011 के विरुद्ध अपील प्रस्तुत करने की अनुमति प्रदान की जाती है ।

10. उपरोक्त विवेचन के क्रम में अपीलांट द्वारा प्रस्तुत प्रार्थना पत्र धारा 96 जा0दी0 स्वीकार होने से अपीलांट द्वारा प्रस्तुत अपील आंशिक रूप से स्वीकार योग्य तथा अधी0न्याया0 द्वारा पारित निर्णय व डिक्री दिनांक 8.12.2011 निरस्त योग्य पाया जाता है । हम प्रकरण में गुणावगुण पर कोई टिप्पणी किये बिना वाद में अपीलांट को पक्षकार नियुक्त कर अधी0न्याया0 द्वारा वाद का पुनः परीक्षण कराया जाना उचित समझते हैं ।
11. अतः अपील अपीलांट आंशिक रूप से स्वीकार की जाती है तथा अधीनस्थ न्यायालय उपखण्ड अधिकारी, ब्यावर का निर्णय व डिक्री दिनांक 8.12.2011 को खारिज किया जाता है तथा प्रकरण अधी0न्याया0 को इन निर्देशों के साथ प्रतिप्रेषित किया जाता है कि वाद में अपीलांट को पक्षकार नियुक्त कर उभयपक्ष को साक्ष्य एवं सुनवाई का समुचित अवसर प्रदान कर प्रकरण को गुणावगुण पर निर्णित करे । पत्रावली फौसल शुमार होकर नंबर से कम हो ।

(बी0एल0मेहरड़ा)

राजस्व अपील प्राधिकारी,
अजमेर

12. निर्णय आज दिनांक 5.4.2019 को मेरे द्वारा लिखवाया जाकर सरे इजलास सुनाया गया ।

(बी0एल0मेहरड़ा)

राजस्व अपील प्राधिकारी,
अजमेर